'प्रो-ओर्गेनिक'

'राजस्थान में जैविक उपभोग को बढ़ावा देने के लिए परियोजना'

गड्ढा खाद

आज किसान अपने खेतों में पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते नजर आ रहे हैं, किंतु रासायनिक उर्वरक अल्पकालीन फायदे के साथ–साथ दीर्घकालीन नुकसान पहुँचा रहे हैं। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति खत्म होती जा रही है व फसल में सिंचाई के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है।

रासायनिक खाद के बजाय यदि किसान कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद आदि का प्रयोग करें तो भूमि की उर्वरा शक्ति दीर्घकाल तक बनी रहेगी तथा उपज की लागत भी कम आएगी।

किसान अपने पास उपलब्ध गोबर को गड्ढा विधि द्वारा तैयार करके अपने खेतों में उपयोग कर सकता है।

गड्ढा खाद बनाने की विधि

- सर्वप्रथम किसान एक ऐसे उपयुक्त स्थान का चयन करें जहाँ पर वर्षा का पानी जमा नहीं होता हों।
- फार्म पर उपलब्ध गोबर की मात्रा के आधार पर गहरा गड्ढा तैयार करें।
- इसके बाद गोबर में गोबर गैस की स्लरी, पेड़–पौधों की पत्तियां व खरपतवार को गोबर में मिला दें।
- तैयार गोबर को गड्ढे में इस प्रकार भरें कि वह जमीन से एक–डेढ़ फीट ऊँचा हो जाए।
- प्रत्येक परत पर पर्याप्त मात्रा में पानी डालना चाहिए जिससे कि खाद के सड़ने की प्रक्रिया जल्दी पूरी हो।
- इसके बाद ढ़ेर को 3 से.मी. मोटाई की मिट्टी की परत से ढ़क दें।
- ढेर का तापमान कुछ ही दिनों में 60–700 से. हो जाएगा।
- गड्ढे वाली खाद 2–3 महीनों में बनकर तैयार हो जाती है और तैयार खाद का उपयोग अपने खेतों में करना चाहिए।

गड्ढा खाद के लाभ

- यह खाद काले व भूरे रंग की होती है व दुर्गन्ध रहित होती है।
- इसके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार होता है।
- इस खाद में नमी की अधिकता होने से फसल में सिंचाई की आवश्यकता कम होती है।
- यह कच्चे गोबर की अपेक्षा कई गुना अधिक फायदेमंद होती है।
- इसे किसान अपने खेत पर आसानी से तैयार कर सकता है।

जीवामृत

जीवामृत बनाने में लगने वाले तत्व एवं मात्रा (एक एकड़)		
1. गाय का ताजा गोबर	–	10 किलो
2. गौमूत्र	–	5–10 लीटर
3. गुड़	–	2 किलो
4. बड़ के पेड़ के नीचे की मिट्टी	–	1 किलो
5. बेसन	–	2 किलो
6. पानी	–	200 लीटर
7. ड्रम	–	प्लास्टिक या सीमेंट

बनाने की विधि

- सबसे पहले 50–60 लीटर पानी को प्लास्टिक या सीमेंट के ड्रम में डालते हैं तथा इसके बाद इसमें 10 किलो गाय का ताजा गोबर डालते हैं।
- इसके बाद लकड़ी के डण्डे से इसको अच्छी तरह से हिलाते हैं। तब तक हिलाते रहते हैं जब तक गोबर अच्छी तरह से मिक्स ना हो जाये।
- इसके बाद 5–10 लीटर गौ मूत्र व 1 किलो बड़ के पेड़ के नीचे की मिट्टी (1–6 इंच की गहराई की मिट्टी) डालकर फिर अच्छी तरह से हिलाते हैं।
- इसके बाद 2 किलो गुड़ के टुकड़े व 2 किलो बेसन इसके अंदर डालकर दुबारा अच्छी तरह से हिलायें। इसके बाद में इसको कपड़े से ढ़क दें तथा इसके बाद हर तीसरे दिन इसको घडी की सुई की दिशा में 8–10 बार घुमायें।
- इस प्रकार से तैयार किये गये मिश्रण को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ फसल में पानी के साथ प्रयोग करें।

CUTS International®
कट्स सेन्टर फॉर कन्ज्यूमर एक्शन, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग
D-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016
फोन: +91.141.2282821; फैक्सः +91.141.4015395, 2282485
ई–मेल: proorganic@cuts.org; वेबसाईट: www.cuts-international.org/CART/proorganic-II

सहयोग से
Swedish Society for Nature Conservation

This document has been produced with the financial contribution by Swedish public development co-operation aid through the Swedish Society for Nature Conservation, SSNC. The views herein shall not necessarily be taken to reflect the official opinion of SSNC or its donors.

मई 2019

स्रोत: एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन, जयपुर